शोध सारांश

‘कनुप्रिया’ और ‘श्रीराधा’ में राधा को मुख्य नायिका के रूप में ग्रहण किया गया है। पर दोनों की कथा वस्तु अलग-अलग है। ‘कनुप्रिया’ में रोमांस के‘क्षण’का प्राधान्य है। ‘श्रीराधा’ में राधा आधुनिक नारी के रूप में दिखाई देती है। वह तमाम मुश्किलों का सामना करती है। प्रेमी के छोड़कर चले जाने से ‘श्रीराधा’ में राधा की वेदना का चित्रण दर्शाया गया है। तुलनात्मक अध्ययन के तौर पर ‘कनुप्रिया’ में वैष्णव प्रेम भावना दिखाई पड़ती है, परंतु ‘श्रीराधा’ में अस्तित्वबोध को महत्त्व दिया गया है। ‘कनुप्रिया’ और ‘श्रीराधा’ की राधा कृष्ण को पाने के लिए तड़प रही है। विरह की स्थिति में दोनों कृष्ण पर आरोप लगाते हैं कि वे उन्हें छोड़कर चले गये। ‘कनुप्रिया’ की राधा तटस्थ रहती है पर ‘श्रीराधा’ की राधा दु:खी न होकर उन्हें जन्म-जन्मांतर के लिए पाने की बात करती है। ‘कनुप्रिया’ और ‘श्रीराधा’ की राधा, कृष्ण से नि:स्वार्थ प्रेम करती है। वह कृष्ण से मान भी करती है, परंतु उस प्रेम में भविष्य नहीं है। फिर भी राधा के प्रेम की निरंतरता कभी नहीं टूटती है। यहाँ प्रेम की महानता यह है कि इसमें प्रेम को पाने की इच्छा नहीं है। ‘श्रीराधा’ की भूमिका में कहा गया है कि न दे पाने की पीड़ा कुछ लोगों के लिए न ले पाने की पीड़ा से बड़ी होती है। ‘श्रीराधा’ में राधा, कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पित होना चाहती है, प्रतिफल में कृष्ण से कुछ पाने की अपेक्षा नहीं करती।

पहले अध्याय में भारतीय साहित्य में राधा के बारे में व्यक्त किया गया है। क्षण-क्षण नवीनता को प्राप्त करने वाली रमणीयता की साकार प्रतिमा इस राधा का अनेक आचार्यों, कवियों, भक्तों, गायकों, कलाकारों और शिल्पियों ने अपनी भाव-सबलता की अमृत धारा से अभिषेक किया है। राधा, कृष्ण की आह्लादिनी शक्ति है। इसमें पहले उप-अध्याय में राधा शब्द की उत्पत्ति और अर्थ के बारे में यह बताया गया है कि बृहत् संस्कृताभिधानम् में राधा शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।

दूसरे उप-अध्याय वेद एवं उपनिषद् में राधा है। इसमें बताया गया है कि वेदों में राधा शब्द का प्रयोग धन, अन्न, पूजा, नक्षत्र आदि के अर्थों में किया जाता है, उपनिषदों में राधा को सबसे श्रेष्ठ स्थान पर रखा गया है। तीसरे उप-अध्याय पुराणों राधा में ब्रह्मवैवर्त पुराण, पद्मपुराण, देवी भागवत पुराण में राधा का चित्र दर्शाया गया है। चौथे उप-अध्याय में जयदेव ‘गीतगोविंद’में जयदेव की राधा का वर्णन है, जहाँ राधा विलासमय जीवन

जीती है। पांचवें उप-अध्याय में विद्यापति की राधा को पूरा यौवन जीती हुई दर्शाया गया है। छठे उप-अध्याय में सूरदास ने राधा को निष्ठावान बताया गया है।

दूसरे अध्याय का नाम है :- धर्मवीर भारती और रमाकांत रथ : एक परिचय। पहले उप-अध्याय में धर्मवीर भारती के साहित्य जगत के प्रति योगदान और निष्ठा के बारे में बताया गया है। इस उप-अध्याय में यह बताया गया है कि वह प्रेम के कवि से अधिक प्रेम-दर्शन के कवि हैं। दूसरे उप-अध्याय में धर्मवीर भारती की जीवनी (शिक्षा, परिवार, यात्रा, पुरस्कार आदि) की चर्चा हुई है।

तीसरेउप-अध्याय में धर्मवीर भारती की रचनाएं कविता संग्रह ('ठंडा लोहा','सात गीत वर्ष','कनुप्रिया','सपना अभी भी') की चर्चा हुई है। जिसमें 'कनुप्रिया'को अत्यंत प्रसिद्ध कृति माना जाता है। यह काव्य प्रेम का प्रतीक है, जिसे प्रबंध काव्य भी माना जाता है। उनकी रचनाओं में नाट्य काव्य 'अंधा युग' सुप्रसिद्ध है, कहानी-संग्रह (बंद गली का आखिरी मकान) भी है। 'गुनाहों का देवता' भी रोमांटिक उपन्यास माना जाता है,साथ ही 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' भी उन्होंने लिखा है। निबंध (ठेले पर हिमालय), रिपोर्ताज, आलोचना, एकांकी संग्रह, शोध प्रबंध, यात्रा-विवरण आदि धर्मवीर भारती की कृतियां है।

चौथे उप-अध्याय में रमाकांत रथ की कविता के प्रति समर्पण, काव्य-लेखन की शुरुआत, पेशा आदि का उल्लेख है पांचवें उप-अध्याय में रमाकांत रथ की जीवनी मतलब जन्म, शिक्षा, प्राप्त पुरस्कारों की चर्चा हुई है। छठे उप-अध्याय में रमाकांत रथ की रचनाएं अर्थात् कविताओं की चर्चा हुई है। 'केते दिनर','अनेके कोठरी','संदिग्ध मृगया','सप्तम ऋतु','सचित्र अंधार','श्रीराधा','श्री पलातक' आदि कविताएं रमाकांत रथ द्वारा लिखी गई है। 'सप्तम ऋतु' के लिए सन् 1978 में उन्हें साहित्य अकादमी के द्वारा पुरस्कृत किया गया। उसके बाद प्रकाशित 'श्रीराधा' (खंड काव्य) ओड़िया की अत्यंत चर्चित कृति है। श्री पलातक भी चर्चित काव्य है, जिसे कृष्ण पर केन्द्रित किया गया है।

तीसरे अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में प्रेम का वर्णन है। यह लघु शोध प्रबंध प्रेम पर आधारित है। इस अध्याय में दोनों कृतियों में वर्णित राधा की दृष्टि से कृष्ण की परिकल्पना का अध्ययन किया गया है। इसी प्रेम को राधा सबसे श्रेष्ठ मानती है। प्रेम के लिए राधा हर बाधाओं का सामना कर गुजरती है।

तीसरे अध्याय के पहले उप-अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा'में प्रेम का स्वरूप और तुलना है। इसके अंतर्गत, दोनों कृतियों के कथानक (सारांश), पृष्ठभूमि, काव्य संवेदना आदि का वर्णन है। दोनों रचनाओं में राधा अलग-अलग दृष्टि से प्रेम करती नजर आती हैं। 'कनुप्रिया' के कथ्य में 'प्रेम की सहजता' के आयाम को ढूंढ़ा गया है। दोनों रचनाओं में लौकिक प्रेम विद्यमान है। 'कनुप्रिया'की भावबोध कवि का निजी भावबोध है। 'श्रीराधा'मेंप्रेम शीर्षतम सोपान तक नहीं पहुंची है, बल्कि एक खोज में कृति की समाप्ती हुई है। दूसरे उप-अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में पारंपरिक प्रेम कथन की चर्चा हुई है। 'कनुप्रिया' में परंपरागत और नवीन दोनों प्रकार के माध्यम अपनाएं गए हैं। रमाकांत रथ की राधा एक आधुनिक नारी है, जिन्हें एक पौराणिक चरित्र के माध्यम से पाठकों के सामने खड़ा किया है। तीसरे उप-अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' के प्रेम में मांसलता और रति प्रसंग का वर्णन किया गया है। दोनों कृतियों के राधा कृष्ण के साथ काम में मग्न रहती हैं। चौथे उप-अध्याय 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' का वैशिष्ट्य है। इसमें दोनों रचनाओं में परिलक्षित सारी विशेषताओं का स्पष्ट वर्णन है। 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में विरहजन्य स्थिति में वेदना का दृश्य चित्रित हुआ है। दोनों रचनाओं में आध्यात्मिक पक्ष दर्शाया गया है। यह दार्शनिक पक्ष को आधार मानकर मानवीय पक्ष अर्थात् लोकत्तर पक्ष का चित्रण है। फिर इन्हीं रचनाओं में मिथकीय पक्ष की चर्चा की गई है, मिथक का बहुत प्रभाव है। देखा जाए तो दोनों कृतियों की मुख्य नायिका मिथकीय पात्र है। पर उसे आधुनिकता के साथ जोड़कर दर्शाया गया है। दोनों रचनाओं में नारीवादी दृष्टि भी दिखाई गई है। दोनों रचनाओं के मुख्य पात्र नारी (राधा) है। इसीलिए दृष्टिकोण नारीवादी है। दोनों रचनाएं साहित्य में क्या प्रभाव ड़ाले है, वह समाज में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' की प्रसिद्धि ही बता सकता है। इन दोनों प्रेम कथानक काव्यों में रहस्यवाद है।

चौथे अध्याय में- समकालीन संदर्भ में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में प्रेम का विश्लेषण और तुलना है। यह दोनों रचनाएं आधुनिक युग में लिखी गयी हैं। जिसे समकालीनता के साथ जोड़कर राधा के प्रेम की तुलना और विश्लेषण संभव है। इसमें पहला उप-अध्याय है:- समकालीन संदर्भ में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' के प्रेम का महत्त्व और सार्थकता। इस उप-अध्याय में दोनों कृतियों में राधा के प्रेम का वर्तमान समाज में कितना गुरुत्व दिया गया है, कितनी समानता आज की नारी और राधा में है, क्या परिवर्तन होने चाहिए, राधा और आधुनिक

काल की नारी का प्रेम सार्थक है या नहीं, यह चर्चा का विषय है। दूसरे उप-अध्याय का नाम समकालीन संदर्भ में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' के प्रेम का विश्लेषण। यह दोनों कृति इसीलिए चर्चित है,कि इसमें राधा के प्रेम की महानता का प्रदर्शन है। वर्तमान युग में ऐसे रिश्तों को लांछन के अलावा कोई और सम्मान नहीं मिलता। यह एक विवादित पक्ष है। तीसरा उप-अध्याय है :- समकालीन संदर्भ में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' के प्रेम की तुलना। प्रेम को आज तक कोई ज्ञानी परिभाषित नहीं कर पाया है। यह तुलना एक प्रयास मात्र है क्योंकि शोध का विषय दोनों रचनाओं में प्रेम भावना का तुलनात्मक अध्ययन है। समकालीन दृष्टि से इसकी चर्चा इसीलिए ग्राह्य है क्योंकि यह आधुनिक काल में लिखी गई है और प्रत्येक रचनाओं की आलोचना वर्तमान संदर्भ से जोड़कर करनी चाहिए।

तब तथ्य की स्पष्टता नजर आती है। समकालीन संदर्भ को दोनों रचनाओं में देखा जाए तो पितृसत्तात्मक समाज को ज्यादा प्रभावित करती है। यहाँ अबला नारी की छवि है, जो समाज द्वारा पीड़ित है। राधा को स्त्री विमर्श पर केन्द्रित किया गया है क्योंकि वह एक नारी है। प्रतीक्षा, मांसलता, प्रकृति का चित्रण भी दोनों कृतियों में स्पष्ट है। समकालीनता के साथ इन सब का तर्कगत विस्तार तीसरे उप-अध्याय में है।

पांचवें अध्याय 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में शिल्पविधान है। इसमें पहले उप-अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' की शैली के बारे में बताया गया है। साहित्यिक रचनाओं में शैली का होना अनिवार्य है। दूसरे उप-अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' की काव्य भाषा की तुलना की गई है। अलग-अलग विद्वानों द्वारा दोनों कृतियों को आधार बनाकर विभिन्न परिभाषा दर्शाया गया है। दोनों रचनाओं में शब्दों का दोहराव दृष्टिगोचर होता है, शब्दों का युगल प्रयोग भी दिखाया गया है। यथा :- 'कनुप्रिया'- एक-एक, मर-मर,'श्रीराधा'- चुप-चुप, होते-होते आदि। दोनों रचनाओं में तत्सम शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। तीसरे उप-अध्याय में दोनों रचनाओं में बिंबों के प्रयोग को बताया गया है। फिर उसके बाद चौथे उप-अध्याय में छंद का प्रयोग,पांचवें उप-अध्याय में अलंकार का प्रयोग और छठे उप-अध्याय में प्रतीक का प्रयोग स्पष्ट है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि धर्मवीर भारती की 'कनुप्रिया' और रमाकांत रथ की 'श्रीराधा' में राधा को समकालीनता के साथ जोड़कर देखने की आवश्यकता है। दोनों रचनाओं में परिलक्षित प्रेम भावना का आधुनिक परिदृश्य में क्या सामंजस्य, असामंजस्य है, वह चिंतनीय है।